M.A. Fourth Semester

Third Paper

Agriculture Geography

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of Geography

Harishchandra P.G.College ,Varanasi

⇒ Agricultural Geography in its broadest sense seeks to describe and explain areal differentiation in agriculture - रीड्स

⇒ Agricultural Geography strives to bring light to the spatial variation in agriculture & the reasons for them :- बर्निहार्ड

⇒ Agricultural Geography may be defined simply as that branch of geography that deals with spatial distribution of agricultural phenomena such as systems of farming and Crops and seeks to interpret such distribution in terms in the interaction of multifarious factors of the environment, both physical and cultural.

प्र०1 कृषि भूगोल क्या है ? इसके स्वरूप एवं विषय क्षेत्र को समझाकर लिखिए।

उत्तर :- **कृषि भूगोल की परिभाषा :—**

कृषि-भूगोल के समानार्थी "एग्रीकल्चरलज्योग्राफी" से आशय कृषिगत भौगोलिक विशेषताओं से है। यह दो शब्दों Agriculture (कृषि) तथा Geography (भूगोल) से मिलकर बना है। एग्रीकल्चर शब्द लैटिन भाषा के 'एगरकल्चरा' (Agricultura) शब्द से उद्धृत है। 'एगर' शब्द का अर्थ 'खेत' है जबकि 'कल्चरा' शब्द का अर्थ खेती-क्रिया या खेती संस्कृति है। संक्षेप में, 'एगर कल्चरा' का अर्थ खेती संस्कृति या खेती कला है। ज्योग्राफी शब्द ग्रीक भाषा के ज्योग्राफिया से (Geographia) उद्धृत है जो पुनः दो शब्दों Geo (पृथ्वी) तथा graphia (वर्णन) से मिलकर बना है। ज्योग्राफिया का अर्थ भू-वर्णन है। इस प्रकार कृषि-भूगोल कृषिगत क्रिया कलाप है जिसके अन्तर्गत इन क्रियाओं का भौगोलिक परिवेश में वर्णन किया जाता है परिणाम-स्वरूप कृषि-भूगोल अध्ययन में कृषि से विषय सामग्री

मिलती है तथा **भूगोल से व्याख्या विधि एवं तकनीक** मिलती है।

कृषि के अन्तर्गत फसलोत्पादन प्रमुख क्रिया है अतः कुछ विद्वान कृषि का अर्थ फसलोत्पादन तक ही सीमित रखते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान इसे **मृदा-पोषण की कला** मानते हैं जिसमें पशुपालन भी सम्मिलित किया जाता है। **खाद्य एवं कृषि संगठन** के प्रति वेदन के अनुसार :- कृषि के अन्तर्गत फसल-क्षेत्र, वृक्ष क्षेत्र, स्थायी घास के मैदान तथा प्राकृतिक चारागाह के अलावा अन्य चारागाह भी सम्मिलित है। **आक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष** के अनुसार :- कृषि मिट्टी-पोषण कला एवं विज्ञान है जिसमें सभी सम्बन्धित क्रियाएं जैसे - एकत्रीकरण, पशुपालन, जुताई तथा फार्मिंग आदि सम्मिलित है। इस प्रकार कृषि वृहद् स्तरीय मृदापोषण एवं खेती कार्य कलाप का अभ्यास एवं विज्ञान है।

(Agriculture is the Science and practice of large scale Soil cultivation in order to produce Crops) **मैकार्टी** के अनुसार "उद्देश्य फसलोत्पादन तथा पशुपालन कार्य को कृषि कहते हैं।

(Agriculture is defined as the purposeful tending of Crops and animals.) आधुनिक युग में कृषि एक उद्यम है, व्यापारिक कृषि व्यवस्था में कृषक का मूल उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लागत तथा आय दो प्रधान पहलू होते हैं जिससे शुद्ध लाभ राशि की जानकारी होती है। इस दृष्टिकोण से कृषि एक क्रमबद्ध उद्यम है जिसमें सभी क्रियाएं सोद्देश्य होती है।

(Agriculture is a systematic enterprise in which all the activities are purposeful and deliberate)

भूगोल की वह शाखा कृषि भूगोल कहलाती है जिसमें कृषि के सभी पक्षों का भौगोलिक वातावरण के संदर्भ में उसकी क्षेत्रीय विशेषताएं निर्धारित करने और प्रादेशीकरण करने के दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। कृषि का प्रादेशिक अध्ययन एवं विश्लेषण कृषि-भूगोल का मूल उद्देश्य है।

कृषि भूगोल के संबंध में कुछ विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएं इस प्रकार है :

बर्नहार्ड (Bernhard) के अनुसार (1915) "कृषि भूगोल कृषि की स्थानिक विभिन्नताओं एवं उनके कारणों को स्पष्ट करता है।"

Agricultural Geography strives to bring light to the spatial variations in agriculture and the reasons for them.

रीड्स (Reeds) के अनुसार (1964) विस्तृत अर्थों में कृषि भूगोल कृषि की क्षेत्रीय विभिन्नता का वर्णन एवं व्याख्या करता है।

Agricultural Geography in its broadest sense seeks to describe and explain areal differentiation.

साइमन्स (Symons - 1968) (सिमन्स) के अनुसार 'कृषि-भूगोल मनुष्य द्वारा भूमि पर कृषि का भूगोल है।'

Agricultural Geography .... as the Geography of man's husbandary of lands.

कपॉक (Coppock - 1968) के अनुसार 'कृषि-भूगोल वेत्ता विश्व में कृषि संबंधी क्रियाओं के प्रतिरूप में पाई जाने वाली विभिन्नता की दशाओं का अध्ययन करते हैं।

मिसल ने कृषि-भूगोल को आर्थिक-भूगोल का अंग माना है तथा आर्थिक-भूगोल की **बुचानान** द्वारा दी गयी परिभाषा — **आर्थिक भूगोल मानवीय क्रियाओं का भूगोल है** (Economic geography is the geography of man's work) से सहमति प्रकट करते हुए उपर्युक्त परिभाषा (Symons - 1968) दी है।

ब्रुकफील्ड (Brookfield - 1962) ने तो इसे खेतों का भूगोल कहा, जिसके अन्तर्गत केवल फसलों के वितरण का ही अध्ययन नहीं होता, बल्कि कृषि से सम्बन्धित अनेक पहलुओं की क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन किया जाता है।

बेनेह महोदय के अनुसार :- कृषि-भूगोल, भूगोल की एक शाखा

है जिसमें कृषि संबंधी तत्वों, विशेषकर फसल तथा उत्पादन पद्धति के क्षेत्रीय-वितरण का अध्ययन किया जाता है तथा वितरण अध्ययन में भौतिक एवं सांस्कृतिक कारकों तथा अन्योन्य क्रिया प्रभावों का भी विश्लेषण किया जाता है। Agricultural Geography may be defined simply as that branch of Geography that deals with spatial distribution of agricultural phenomena such as systems of farming and crops and seeks to interpret such distributions in terms of the interaction of multifarious factors of the environ-ment both physical and cultural) / इस प्रकार "कृषि-भूगोल एक क्रमबद्ध विज्ञान है जिसके अन्तर्गत विभिन्न स्तरीय प्रदेशों को फसलोत्पादन स्थिति, वितरण प्रतिरूप (क्षेत्रीय एवं कालिक), कार्य-कारण क्रियात्मक तथा क्षेत्रीय अन्तर्संबंधों का अध्ययन किया जाता है जिसका उद्देश्य कृषि की क्षेत्रीय-विशेषताओं से अवगत होकर, उस क्षेत्र के सर्वांगीण आर्थिक विकास के लिए आयोजना तैयार करना है, जिसके कार्यान्वयन से वहाँ के निवासियों का जीवन-स्तर निरन्तर ऊँचा उठ सके।" Thus Agricultural geography is a systematic science which deals with the production and patterns of crop distribution (spatial and temporal) in terms of cause-effect and functional relationships at any study level ultimately aiming at preparing a plan for an over-all agro-economic development of the region.

कृषि-भूगोल का स्वरूप (Nature of Ag. Geography)

कृषि भूगोल की प्रकृति या स्वरूप कृषि के विभिन्न पक्षों (कृषि उत्पादन, स्वरूप, आर्थिक दशाएं, वितरण-प्रतिरूप, स्थानिक एवं क्षेत्रीय विभिन्नता एवं कृषि तथा वातावरण अन्तर्सम्बन्धों) के अध्ययन से ज्ञात होता है।

कृषि भूगोल के स्वरूप को जानने के लिए निम्नांकित बातों पर ध्यान देना समीचीन होगा।

i) **भौतिक वातावरण एवं कृषि क्रिया का संबंध :-** कृषि क्रिया पर भौतिक वातावरण के तत्वों का अधिक प्रभाव पड़ता है। जिससे स्थानिक एवं क्षेत्रीय विभिन्नताएँ उत्पन्न हो जाती है जो कृषि-भूगोल के विविधतापूर्ण स्वरूप को स्पष्ट करता है। उदाहरणस्वरूप : विश्व स्तर पर यदि हम फसल-प्रतिरूप का अध्ययन करें तो जलवायु विभिन्नता के कारण फसलों के विभिन्न प्रतिरूप पाये जाते हैं। जो कि स्थान एवं क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में वातावरण से संबंध रखते हैं।

(ii) **जनसंख्या घनत्व तथा कृषि-भूमि का संबंध :-** कृषि-भूगोल के स्वरूप का निर्धारण जनसंख्या घनत्व तथा कृषि-भूमि के सम्बन्धों से भी किया जाता है। अर्थात स्थान विशेष की जनसंख्या वहाँ की कृषि भूमि उपयोग किस प्रकार करती है। जनसंख्या के सापेक्ष में कृषि भूमि अधिक है अथवा कम है; इन बातों पर विशेष बल दिया जाता है।

जनसंख्या-घनत्व तथा कृषि-भूमि संबंधों के अन्तर्गत, कृषि की गहनता, सिंचाई की क्षमता, अत्यधिक व अनुकूलतम उत्पादन एवं भूमि-संरक्षण आदि तथ्यों का भी अध्ययन किया जाता है।

(iii) **कृषि का परिवर्तनशील स्वरूप :-** कृषि-भूगोल का अध्ययन समय के साथ-साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक काल तक कृषि की प्रक्रिया, व्यवस्था पद्धति, एवं स्वरूप में बेहद-परिवर्तन आया है।

ऐतिहासिक काल में जहाँ कृषि, वन, लकड़ी एवं आखेट कार्य तक सीमित थी वहीं आज की कृषि पद्धति जटिलताओं से भरी पड़ी है। बढ़ती जनसंख्या ने कृषि-पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन

क्षेत्रों में अहम् भूमिका अदा की है। जहाँ पहले जीवन-निर्वाहन एवं परम्परावादी कृषि की जाती थी आज नई-नई तकनीकी एवं विधि के माध्यम से नयी कृषि एवं अधिक उत्पादन हो रहा है।

(iv) कृषि-भूगोल का आर्थिक स्वरूप :- कृषि-भूगोल, आर्थिक भूगोल की ही एक शाखा है अतः इसमें आर्थिक पक्षों का अध्ययन भी किया जाता है। आज किसी भी देश की अर्थ-व्यवस्था में कृषि का विशेष महत्व है। विकासशील देशों की अर्थ-व्यवस्था कृषि पर ही निर्भर है जहाँ 40-50 प्रतिशत राष्ट्रीय आय कृषि से ही प्राप्त होती है, अतः कृषि भूगोल का आर्थिक स्वरूप अति महत्वपूर्ण है।

(v) कृषि-भूगोल का राजनैतिक स्वरूप :- आज बढ़ती जनसंख्या कम होती कृषि-भूमि ने कृषि-क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियों को जन्म दिया है। फसलों का (आयात-निर्यात) व्यापार, विनिमय, भण्डारण, कृषि नीति एवं समझौते तथा **पेटेंट की व्यवस्था** आदि ने पूरे विश्व की कृषि फसल को हिला कर रख दिया है।

(vi) सैद्धान्तिक स्वरूप :- कृषि-भूगोल के अन्तर्गत उन विचारधाराएँ एवं सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है जिससे फसल उत्पादन प्रभावित होता है।

आज फसल उत्पादन से सम्बन्धित अनेक सिद्धान्त ज्ञात हैं जिससे अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है, फसल चक्र, फसल संयोजन, कृषि भूमि उपयोग, एवं भूमि संरक्षण आदि की विचारधाराएं कृषि-भूगोल के सैद्धान्तिक स्वरूप को स्पष्ट करती हैं।

कृषि भूगोल का स्वरूप प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है जिनका मानव अपनी क्षमता तथा आवश्यकतानुसार विकासोन्मुख दिशा की ओर संशोधन करता है, इनका आरम्भ से ही अनुकूल वातावरण रखने के प्रयास से होता है। यह उपयुक्त

जलवायु, धरातल एवं अपवाह, मिट्टी तथा जैविक तत्वों द्वारा निर्धारित होती है। विश्व के विभिन्न भागों मे इन कारकों में समानता नही है जिससे कृषि के विभिन्न रूप स्वाभाविक है।

सम्पन्न, विकासोन्मुख क्षेत्रों मे तकनीकी तथा अन्य रूपों मे निवेशों का अधिक उपयोग करने वाली कृषि की संरचना एवं उद्देश्य का प्रतिरूप पुरातन तकनीकी, तथा पूँजी रहित कृषि की संरचना एवं उद्देश्य से पूर्णत: भिन्न होना स्वाभाविक है। उदाहरणस्वरूप पश्चिमी विकसित देशों में कृषि-पद्धति और तकनीकी में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है तथा विज्ञान का प्रवेश इसके सभी पक्षो मे दृष्टिगत होता है। फलत: अधिक उपज दर अधिक उत्पादन तथा उसकी अधिक विश्वसनीयता पाश्चात्य देशों की कृषि की विशेषताएं है। इसके विपरीत दक्षिण-पूर्वी एशिया में गहन कृषि होती है, परन्तु कई शताब्दियो से कृषि-पद्धति और तकनीकी में अधिक परिवर्तन नही हुआ और पश्चिमी देशों की तुलना में कृषि पिछड़ी हुई है।

विश्व मे औद्योगीकरण और नगरीकरण मे तीव्र वृद्धि होते हुए भी कृषि ही एक ऐसी क्रिया है जिसमे सर्वाधिक क्रियाशील जनसंख्या लगी हुई है। संसार की कार्यरत जनसंख्या का 45.3% भाग जीविका के लिए इस पर निर्भर है। विकासशील देश मे राष्ट्रीय आय का प्रमुख-स्रोत कृषि होती है। उदाहरणस्वरूप सन् 1971 मे भारत की कुल घरेलू उत्पत्ति का 48% भाग कृषि से प्राप्त हुआ।

आर्थिक कार्य के रूप में कृषि को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है— एक; **जीविका अर्जित करने के साधन के रूप मे**; दूसरे, **एक विशिष्ट प्रकार के जीवन के रूप में**।

प्रथम रूप में कृषि एक उद्योग के रूप मे है तथा कृषि-प्रक्रिया से कृषक का जीवन सम्बद्ध नही है। परन्तु दूसरे रूप में कृषक के जीवन के सभी पक्ष कृषि से जुड़े है। दोनो प्रकार की कृषि का स्वरूप प्राकृतिक तथा मानवीय तत्वों के अन्तर्सम्बन्धों का ही परिणाम है। कृषि पद्धति का वास्तविक स्वरूप तीन समूह के कारकों पर निर्भर करता है:- **एक**, कृषि क्षेत्र की वन्य-परिस्थितकीय तत्व जिसे फार्म की स्थानीय विशेषताएं कहा जाता है। **दूसरे**; फार्म की सापेक्षिक स्थिति तथा **तीसरे**, कृषक की वैयक्तिक ... [illegible]

आर्थिक तथा राजनितिक विशेषताएं।

संसार के विभिन्न भागों में इन प्राकृतिक एवं मानवीय दशाओं की विभिन्नता होने के कारण इसके समग्र स्वरुप में अन्तर होना स्वाभाविक है।

कोप्पे ने कृषि-भूगोल अध्ययन में कृषिगत संरचना विश्लेषण का विशेष रुप से उल्लेख किया। **बुचनान** ने कृषि-भूगोल अध्ययन में कृषि प्रदेशों के परिसीमन समस्या को महत्वपूर्ण बताया है। यद्यपि **बेकेल** तथा **कोरले** का कृषि-विभाजन भौतिक वितरण की देन है जबकि **बुचनान** का कृषि विभाजन कृषि-पद्धति कृषक जीवन-यापन, अर्थ व्यवस्था आदि सांस्कृतिक विशेषताओं की देन है।

भौगोलिक अध्ययन में मापक एक मूल-भूत समस्या है। कृषि भूगोल में आँकड़े प्रधानतः निम्नलिखित चार स्तरों पर एकत्रित तथा वर्णित किये जाते हैं।

(i) राष्ट्रीय स्तर (ii) कृषि-प्रदेश स्तर (iii) फार्म-स्तर तथा
(iv) खेत स्तर

राष्ट्रीय स्तर पर कृषि सम्बन्धित सभी प्रकार के आँकड़े उपलब्ध हो जाते हैं। ये प्रशासनिक तथा उप-प्रशासनिक इकाई के आधार पर संकलित किये जाते हैं जिससे तुलनात्मक अध्ययन में सहायता मिलती है। **फार्म** क्षेत्र की दृष्टि से स्वयं अपने ही परिभाषित होता है। यद्यपि फार्म-किस्मों के रुप विभाजन अत्यन्त आवश्यक है। फार्म से संबंधित कृषि भूगोल वेत्ता का अध्ययन प्रधानतः निम्नांकित पहलुओं पर होकर होना चाहिए —

(i) बाजार के संबंध में फार्म की स्थिति
(ii) फार्म व्यवस्था तथा आर्थिक प्रतिरुप
(iii) क्षेत्रीय वितरण एवं प्रतिरुप, तथा
(iv) फार्म-किस्में।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, कृषि अत्यन्त परिवर्तनशील क्रिया है। अतः स्वाभाविक रुप से कृषि का स्वरुप भी परिवर्तन-शील ही होगा।

कृषि-भूगोल का विषय-क्षेत्र एवं महत्व :—

कृषि-भूगोल की परिधि में आने वाले प्रमुख विषय, फसलोत्पादन तथा पशु पालन के लक्ष्य से भूमि-उपयोग, भूमि उपयोग का स्थानीकरण तथा उसके निर्णय की प्रक्रिया, विभिन्न कृषि पद्धतियों का निर्धारण, कृषि पद्धतियों में स्थानिक तथा कालिक अन्तर, विभिन्न प्रकार के कृषि पद्धतियों का स्थानिक पर्यावरण से संबंध एवं पारस्थितिक क्रियाओं का विवेचनात्मक अध्ययन है। इनका सार कृषि-उद्यम (farm enterprise) तथा कृषि की प्रक्रियाओं के क्षेत्रीय विशेषताओं का विश्लेषण एवं व्याख्या है। "कृषि-पद्धति वास्तव में पारिस्थितिक तंत्र का संशोधित रूप होता है यह संशोधन अधिक उपज पाने के लक्ष्य से पारिस्थितिक तंत्र की प्रक्रियाओं के नियंत्रण द्वारा किया जाता है।

विषय के बहुमुखी विकास में, विज्ञान एवं तकनीकी उपलब्धियों में, व्यावहारिक अनुप्रयोग की सहायता से बदलती सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थिति में कृषि विद्वानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। फलस्वरूप कृषि-भूगोल को आज एक स्वतंत्र विषय की मान्यता मिली है। इस प्रकार आधुनिक-भूगोल की शाखाओं में कृषि-भूगोल विषय ने एक विशिष्ट स्थान धारण कर लिया है। आज यह विषय क्रमशः **कृषि भूमि उपयोग, नियोजन एवं क्षेत्र विकास** अध्ययन की धुरी बन गया है।" कृषि-भूगोल अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य एवं पक्ष इस प्रकार हैं:-

(i) भूतल पर कृषि फसलों के वितरण प्रतिरूप का विवेचन।
(ii) कृषि फसलों के कार्यिक संगठन का विवेचन।
(iii) कृषि प्रकारों के निर्धारण, उद्भव क्षेत्रीय समानता एवं असमानताओं का विश्लेषण।
(iv) विभिन्न कृषि पद्धतियों का निर्धारण तथा उनके कार्यिक संगठन का सामाजिक विवेचन।
(v) कृषि प्रकार परिवर्तन की दिशा तथा आयाम का निर्धारण।
(vi) फसल उत्पादन प्रदेश, शस्य सम्मिश्रण प्रदेश या कृषि-गत उद्यम पद्धति प्रदेश का निर्धारण।
(vii) प्रत्येक प्रदेश में कृषि क्षमता स्तर तथा उनके पारस्परिक अन्तर के स्तर का मापन एवं विवेचन।

(viii) कृषि उत्पादकता स्तर को विश्लेषित करना तथा निर्बल कृषि उत्पादकता प्रदेशों को कंगित एवं प्रकाशमान करना।

(ix) निर्बल कृषि उत्पादकता के लिए उत्तरदायी कारकों की जानकारी प्राप्त करना जिससे ऐसे प्रदेशों के विकास गति को तीव्र किया जा सके।

(x) क्षेत्रीय कृषि विकास नियोजन के आधार के रूप में गत्यात्मक तथा गतिहीन प्रदेशों का चार्ट सोमन।

(xi) क्षेत्रीय कृषि विकास के दूरगामी नियोजन के लिए प्रादेशिक प्रेक्षण तथा पूर्वानुमान।

(xii) क्षेत्रीय कृषि नियोजन का निर्धारण एवं कार्यान्वयन।

उपर्युक्त सभी पक्ष कृषि-भूगोल के महत्वपूर्ण विषय क्षेत्र हैं।

भौगोलिक कारक कृषि की वाह्य सीमाएं निर्धारित करते हैं। इन कारकों में सबसे महत्वपूर्ण जलवायु है जो एक ओर कृषि की अक्षांशीय सीमा तथा ऊँचाई की सीमा निर्धारित करती है तो दूसरी ओर फसलों का प्रादेशिक वितरण तथा उत्पादन की सभी प्रक्रियाएं जलवायु पर निर्भर होती हैं। कृषि पर धरातल का प्रभाव ऊँचाई, ढाल की प्रवणता एवं उच्चावच के माध्यम से पड़ता है। तीसरा प्रमुख प्राकृतिक कारक मिट्टी है। कृषि की स्थानीय संरचना और प्रादेशिक विभिन्नता को उत्पन्न करने वाले इन प्राकृतिक कारकों का अध्ययन कृषि-भूगोल का अंग है।

कृषि-भूगोल मानव निर्मित दशाएं सामाजिक तथा आर्थिक तथा इनके प्रतिरूप को निश्चित करने में महत्वपूर्ण हैं। भूमि स्वामित्व, खेतों का आकार, क्षेत्रफल एवं वितरण, कृषि श्रमिकों की उपलब्धि, कृषि के उपयोग में आने वाले औजार (उपकरण), सिंचाई की सुविधा, बाजार की स्थिति, यातायात के साधन एवं कृषकों का दृष्टिकोण सभी कृषित भूमि के उपयोग को प्रभावित करते हैं। इस कारण इन कारकों का अध्ययन भी कृषि-भूगोल के अन्तर्गत आता है।

कृषि के स्वरूप और प्रादेशिक वितरण को प्रभावित करने वाली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान के प्रयोग द्वारा प्राकृतिक अवरोधों पर नियंत्रण पाने का प्रयास, जैसे: सिंचाई, रासायनिक

उर्वरकों, कीटाणुनाशक एवं रोगनाशक रसायनों का प्रयोग, उन्नत बीज, यंत्रीकरण तथा हलचालित मशीनों का उपयोग आदि प्रवृत्तियों का अध्ययन कृषि भूगोल का विषय है।

इसके विभिन्न भागों में प्राकृतिक एवं मानवीय दशाओं की विभिन्नता के कारण कृषि के समग्रस्व रूप में अन्तर का होना; भूमि उपयोग, फसलों, कृषि की विधियों तथा अर्थ व्यवस्था में बहुत प्रादेशिक अन्तर आदि के विश्लेषण के लिए कृषि-प्रदेश निर्धारित करना तथा विभिन्न प्रकार की कृषि की विशेषताओं का वातावरण के सन्दर्भ में विवेचना करना कृषि-भूगोल का सबसे महत्वपूर्ण विषय है। फसलों तथा पशुओं के प्रादेशिक वितरण का अध्ययन भी इसी पक्ष से सम्बन्धित है।

सारांशतः कृषि तथ्यों का भूतल पर क्षेत्रीय सन्दर्भ में कथन, विवेचन, विश्लेषण एवं संश्लेषण करना कृषि अध्ययन का चरम उद्देश्य है। कृषिगत अन्तर्सम्बन्ध के विषय क्षेत्र को सम्पूर्ण दृष्टि से तीन मुख्य आयाम है।

(क) भौतिक वातावरण एवं कृषिगत लक्षणों का अन्तर्सम्बन्ध।

(ख) जनसंख्या वितरण घनत्व, जनांकिकी विशेषताएं तथा उपलब्ध कृषिगत भूमि एवं कृषि कार्यों का संबंध।

(ग) सामाजिक-आर्थिक अथवा सांस्कृतिक पारिस्थितिकी विशेषताएं तथा कृषिगत भूमि उपयोग एवं कृषि उत्पादकता प्रतिरूप का संबंध।

अन्त में कृषि की समस्याएं एवं नियोजन को भी कृषि भूगोल में स्थान मिला है।

Thus the major objective of agricultural Geography is the analysis of the agricultural areas and their natural, economic and social relationship as reflected quality. Such agricultural geographic studies are necessary for any activity of man, Particularly for planning and development purposes